सौहार्दं प्रकृतेः शोभा

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» पारस्परिक स्नेह और सौहार्द का महत्व

प्रश्न 1 (आसान). समाज में आपसी झगड़े का क्या कारण होता है?
उत्तर – स्वार्थ और एक-दूसरे का अनादर।

प्रश्न 2 (आसान). आपसी प्रेम से समाज को क्या लाभ होता है?
उत्तर – समाज में शांति और खुशी आती है।

प्रश्न 3 (मध्यम). आपसी स्नेह और सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए हम अपने दैनिक जीवन में क्या कर सकते हैं?
उत्तर – दूसरों का सम्मान करना, उनकी मदद करना और उनकी भलाई के बारे में सोचना।

प्रश्न 4 (कठिन). प्रकृति माता हमें आपसी सौहार्द के बारे में क्या संदेश देती हैं, इस पाठ के संदर्भ में?
उत्तर – प्रकृति माता यह संदेश देती हैं कि सभी जीव एक-दूसरे पर निर्भर हैं और सभी का अपना महत्व है, इसलिए हमें झगड़ा छोड़कर मिलजुलकर रहना चाहिए।

» वनराज की दुर्दशा और वानरों का विद्रोह

प्रश्न 5 (आसान). शेर किस अवस्था में था जब वानरों ने उसे परेशान करना शुरू किया?
उत्तर – शेर सुख से विश्राम कर रहा था और वह थोड़ा कमजोर पड़ गया था।

प्रश्न 6 (आसान). वानरों ने सबसे पहले शेर के किस अंग को पकड़ा?
उत्तर – वानरों ने सबसे पहले शेर की पूँछ पकड़ी।

प्रश्न 7 (मध्यम). वानर शेर को तंग करके क्या साबित करना चाहते थे?
उत्तर – वानर यह साबित करना चाहते थे कि एक कमजोर राजा, जो अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता, वह जंगल का राजा बनने योग्य नहीं है और न ही वह दूसरों की रक्षा कर सकता है।

प्रश्न 8 (कठिन). इस घटना से शेर की 'वनराज' की छवि पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – इस घटना से शेर की 'वनराज' की छवि धूमिल हुई। उसकी शक्ति और अधिकार पर सवाल उठा, क्योंकि वह छोटे जानवरों से भी अपनी रक्षा नहीं कर पा रहा था, जिससे अन्य जानवर भी उसे गंभीरता से लेना बंद कर देते हैं।

» राजा के कर्तव्य और योग्यता पर चर्चा

प्रश्न 9 (आसान). राजा का मुख्य कर्तव्य क्या है?
उत्तर – अपनी प्रजा की रक्षा करना।

प्रश्न 10 (आसान). क्या एक राजा 'भक्षक' हो सकता है?
उत्तर – नहीं, राजा को हमेशा 'रक्षक' होना चाहिए, न कि भक्षक।

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर कोई राजा खुद अपनी रक्षा नहीं कर सकता, तो वह दूसरों की रक्षा कैसे करेगा?
उत्तर – अगर कोई राजा खुद अपनी रक्षा नहीं कर सकता, तो वह दूसरों की रक्षा करने में असमर्थ होगा क्योंकि उसमें आवश्यक योग्यता और शक्ति नहीं होगी।

प्रश्न 12 (कठिन). पंचतंत्र की उक्ति 'यो न रक्षति वित्रास्तान्...' का अर्थ क्या है और यह राजा के कर्तव्य से कैसे संबंधित है?
उत्तर – इस उक्ति का अर्थ है कि जो राजा डर से पीड़ित लोगों की रक्षा नहीं करता, वह मनुष्य रूप में पशु के समान है। यह राजा के मूल कर्तव्य को उजागर करती है कि उसे हमेशा अपनी प्रजा का रक्षक होना चाहिए, अन्यथा वह अपने पद के योग्य नहीं है।

» काक (कौए) का वनराज पद पर दावा

प्रश्न 13 (आसान). कौआ किस पद का दावा कर रहा था?
उत्तर – वनराज का

प्रश्न 14 (आसान). कौए को किस जानवर ने आलोचना की?
उत्तर – कोयल ने

प्रश्न 15 (मध्यम). कौए ने अपनी कौन सी दो मुख्य ख़ूबियाँ बताईं?
उत्तर – परिश्रम (मेहनत) और ऐक्यं (एकता)

प्रश्न 16 (कठिन). कोयल ने कौए की आलोचना किन आधारों पर की?
उत्तर – कर्कश आवाज़, काला रंग और कुछ भी खा लेने (मेध्यामेध्यभक्षक) के आधार पर।

» पिक (कोयल) और काक (कौए) का संवाद

प्रश्न 17 (आसान). वसंत समये कस्य पहचानः भवति?
उत्तर – पिक-काकयोः

प्रश्न 18 (आसान). कः कर्कशध्वनिः करोति?
उत्तर – काकः

प्रश्न 19 (मध्यम). कोयल कौए पर किस बात को लेकर आपत्ति करती है?
उत्तर – कौआ की कर्कश ध्वनि और उसके खान-पान पर।

प्रश्न 20 (कठिन). कौआ किस तर्क से अपनी उपयोगिता सिद्ध करता है?
उत्तर – कौआ यह तर्क देता है कि वह कोयल के बच्चों का पालन-पोषण करता है, जिससे कोयलें जीवित रहती हैं।

» गज (हाथी) का बल और पराक्रम का दावा

प्रश्न 21 (आसान). गज खुद को कैसा प्राणी बताता है?
उत्तर – गज खुद को विशालकाय, बलशाली और पराक्रमी बताता है।

प्रश्न 22 (आसान). गज किससे शिकारियों को मारने की बात करता है?
उत्तर – गज अपनी सूंड से शिकारियों को मारने की बात करता है।

प्रश्न 23 (मध्यम). गज किस आधार पर वनराज पद के लिए स्वयं को योग्य मानता है?
उत्तर – गज अपने विशालकाय शरीर, बल और पराक्रम के आधार पर स्वयं को वनराज पद के लिए योग्य मानता है।

प्रश्न 24 (कठिन). इस दावे में गज की कौन सी विशेषताएँ प्रमुखता से उजागर होती हैं?
उत्तर – इस दावे में गज की शारीरिक विशालता, उसकी अपार शक्ति, और उसकी निडरता व वीरता (पराक्रम) प्रमुखता से उजागर होती हैं।

» वानर का हाथियों पर विजय का प्रदर्शन

प्रश्न 25 (आसान). वानर ने पहले हाथी के किस अंग को पकड़ा?
उत्तर – पूँछ

प्रश्न 26 (आसान). हाथी वानर को क्यों नहीं पकड़ पाया?
उत्तर – क्योंकि वानर बहुत फुर्तीला था और एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद जाता था।

प्रश्न 27 (मध्यम). वानरों ने इस घटना से क्या सिद्ध किया?
उत्तर – वानरों ने सिद्ध किया कि वे विशालकाय और पराक्रमी जानवरों को भी अपनी चतुराई और फुर्ती से हरा सकते हैं, और इसलिए वे वन्यजीवों की रक्षा में सक्षम हैं।

प्रश्न 28 (कठिन). यह घटना किस बात का संकेत देती है कि वनराज बनने के लिए केवल शारीरिक शक्ति पर्याप्त नहीं है?
उत्तर – यह घटना दिखाती है कि वनराज बनने के लिए केवल शारीरिक शक्ति काफी नहीं है, बल्कि बुद्धिमत्ता, चतुराई, फुर्ती और समस्या-समाधान की क्षमता भी ज़रूरी है। वानरों ने अपनी इन्हीं विशेषताओं से हाथी को पराजित किया।

» बक (बगुले) का ध्यानमग्नता और नियोजन का दावा

प्रश्न 29 (आसान). बगुला कहाँ बैठकर अपनी योग्यता सिद्ध करने का दावा करता है?
उत्तर – नदी के बीच में ठंडे जल में।

प्रश्न 30 (आसान). बगुला किस प्रकार की स्थिति में रहकर उपाय सोचने की बात कहता है?
उत्तर – अविचल (स्थिर) और ध्यानमग्न होकर।

प्रश्न 31 (मध्यम). बगुला अपनी कौन सी दो मुख्य विशेषताओं के कारण खुद को वनराज के योग्य मानता है?
उत्तर – शांत रहकर ध्यानमग्न होना और योजनाएँ बनाकर उन्हें लागू करवाना।

प्रश्न 32 (कठिन). बगुले का यह दावा हमें किस प्रकार की सीख देता है, खासकर नेतृत्व के संदर्भ में?
उत्तर – यह दावा हमें सिखाता है कि नेतृत्व के लिए सिर्फ बल ही नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता, एकाग्रता और सुदृढ़ नियोजन क्षमता भी आवश्यक है।

» मयूर (मोर) का सौंदर्य और पक्षिराज का दावा

प्रश्न 33 (आसान). मोर अपने सिर पर क्या होने के कारण खुद को पक्षिराज कहता है?
उत्तर – राजमुकुट जैसी शिखा।

प्रश्न 34 (आसान). मोर किस चीज़ से वन्यजीवों को आकर्षित करके जंगल से बाहर निकालने की बात करता है?
उत्तर – अपने सौंदर्य और नृत्य से।

प्रश्न 35 (मध्यम). मोर ने अपने नृत्य को किसकी आराधना बताया है?
उत्तर – प्रकृति की आराधना।

प्रश्न 36 (कठिन). मोर के अनुसार, त्रिलोक में उसके जैसा सुंदर कौन नहीं है?
उत्तर – कोई भी नहीं।

» व्याघ्र और चित्रक का भक्षक के रूप में अस्वीकृति

प्रश्न 37 (आसान). व्याघ्र और चित्रक किस प्रकार के जीव हैं - रक्षक या भक्षक?
उत्तर – भक्षक।

प्रश्न 38 (आसान). क्या जंगल के बाकी जानवर भक्षक को राजा मानते हैं?
उत्तर – नहीं।

प्रश्न 39 (मध्यम). वनराज के पद के लिए भक्षक क्यों अयोग्य माने जाते हैं?
उत्तर – क्योंकि राजा का मुख्य कर्तव्य अपनी प्रजा की रक्षा करना होता है, जबकि भक्षक प्रजा का भक्षण करते हैं।

» उलूक (उल्लू) के राज्याभिषेक का प्रयास और काक का विरोध

प्रश्न 40 (आसान). पक्षियों ने राजा बनाने के लिए किसे चुना?
उत्तर – उल्लू को।

प्रश्न 41 (आसान). उल्लू के चुनाव का विरोध किसने किया?
उत्तर – कौए ने।

प्रश्न 42 (मध्यम). पक्षियों ने उल्लू को क्यों चुना था? कोई एक कारण बताओ।
उत्तर – उन्होंने सोचा कि उल्लू 'आत्माभिमान रहित' और 'पद से निर्लिप्त' है, यानी उसे कोई घमंड नहीं और न ही उसे पद का लोभ है।

प्रश्न 43 (कठिन). कौए ने उल्लू के राज्याभिषेक का विरोध करते हुए क्या मुख्य कारण बताए?
उत्तर – कौए ने दो मुख्य कारण बताए: पहला, उल्लू 'दिवान्ध' (दिन में अंधा) होता है, तो वह दिन में प्रजा की रक्षा कैसे करेगा। दूसरा, उल्लू का स्वभाव 'क्रूर' होता है, जो एक राजा के लिए उचित नहीं।

» प्रकृति माता का हस्तक्षेप और सद्भाव का संदेश

प्रश्न 44 (आसान). प्रकृति माता सभी प्राणियों को क्या कहकर संबोधित करती हैं?
उत्तर – मेरे बच्चे (सन्ततयः)

प्रश्न 45 (आसान). प्रकृति माता के अनुसार, प्राणियों को कैसे रहना चाहिए?
उत्तर – प्रेम और सहयोग से मिलकर

प्रश्न 46 (मध्यम). प्रकृति माता क्यों हस्तक्षेप करती हैं? उनका मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – वे प्राणियों के आपसी झगड़े को रोकने और उनमें सद्भाव स्थापित करने के लिए हस्तक्षेप करती हैं, क्योंकि वे उन्हें अपने बच्चे मानती हैं।

प्रश्न 47 (कठिन). प्रकृति माता के इस संदेश का 'सौहार्दं प्रकृतेः शोभा' शीर्षक से क्या संबंध है?
उत्तर – प्रकृति माता का संदेश 'सौहार्दं प्रकृतेः शोभा' शीर्षक से सीधा जुड़ा है क्योंकि वे यह सिखाती हैं कि सभी प्राणियों का मिल-जुलकर, प्रेम और सहयोग से रहना ही प्रकृति की असली सुंदरता है। जब सद्भाव होता है, तभी प्रकृति की शोभा बनी रहती है।

» पारस्परिक सहयोग से लाभ की शिक्षा

प्रश्न 48 (आसान). प्रकृति में विवाद से क्या होता है?
उत्तर – हानि होती है।

प्रश्न 49 (आसान). आपसी सहयोग का क्या परिणाम होता है?
उत्तर – सभी को लाभ होता है।

प्रश्न 50 (मध्यम). जब प्राणी आपस में सहयोग करते हैं, तो प्रकृति पर क्या प्रभाव पड़ता है?
उत्तर – प्रकृति का सौंदर्य और जीवन रसमय बनता है।

प्रश्न 51 (कठिन). 'पारस्परिक सहयोग' से आप क्या समझते हैं और यह क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – पारस्परिक सहयोग का अर्थ है एक-दूसरे की मदद करना और मिलकर काम करना। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे न सिर्फ समस्याओं का समाधान होता है, बल्कि खुशहाली भी आती है और जीवन अधिक आनंदमय बनता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए आपके कक्षा में दो मित्र हैं - राम और श्याम। राम पढ़ाई में बहुत अच्छा है और श्याम खेलकूद में। अगर वे दोनों सिर्फ अपनी-अपनी बात पर अड़े रहें और एक-दूसरे की विशेषता को न समझें, तो क्या होगा?

› पहला कदम: अगर वे आपस में सौहार्द नहीं रखेंगे, तो राम श्याम को सिर्फ एक खिलाड़ी मानेगा और श्याम राम को सिर्फ एक किताबी कीड़ा समझेगा।

› दूसरा कदम: वे एक-दूसरे से कोई मदद नहीं लेंगे, और शायद आपस में झगड़ा भी कर बैठें। राम श्याम को पढ़ाई में मदद नहीं करेगा, और श्याम राम को खेल के नियम नहीं समझाएगा।

› तीसरा कदम: परिणाम स्वरूप, राम खेलकूद में कमजोर रहेगा और श्याम पढ़ाई में। दोनों का विकास अधूरा रह जाएगा।

› चौथा कदम: अगर वे आपसी स्नेह और सौहार्द से काम लें, तो राम श्याम को पढ़ाई में मदद कर सकता है और श्याम राम को खेलकूद में बेहतर बना सकता है। वे एक-दूसरे से सीखकर आगे बढ़ेंगे।

उत्तर – आपसी स्नेह और सौहार्द के बिना, दोनों का व्यक्तिगत विकास रुकेगा और वे एक-दूसरे की शक्तियों का लाभ नहीं उठा पाएंगे। मिलजुलकर रहने से ही वे दोनों बेहतर बन सकते हैं।

उदाहरण 2. शेर के कमजोर पड़ने पर वानरों ने उसे कैसे परेशान किया?

› सबसे पहले, एक वानर ने शेर की पूँछ खींची।

› जब शेर ने उसे मारने की कोशिश की, तो वानर कूदकर पेड़ पर चढ़ गया।

› फिर, दूसरे वानर ने आकर शेर का कान खींचा और वह भी पेड़ पर चढ़ गया।

› इसी तरह, कई वानरों ने बार-बार शेर को तंग किया, जिससे वो बहुत परेशान हो गया।

› शेर गुस्से में इधर-उधर भागा, गरजा, पर कुछ भी करने में असमर्थ रहा।

› वानर हँस रहे थे और दूसरे पक्षी भी शेर की यह दशा देखकर खुशी से चहचहा रहे थे।

उत्तर – वानरों ने शेर की पूँछ खींचकर, कान खींचकर और बार-बार उसे तंग करके परेशान किया, जिससे शेर क्रोधित और असहाय महसूस कर रहा था।

उदाहरण 3. एक नगर में एक राजा है जो बहुत आलसी है और हमेशा सोता रहता है। शत्रु जब नगर पर हमला करते हैं, तो वह खुद डर कर भाग जाता है। क्या यह राजा अपनी प्रजा के लिए सही है? अपने उत्तर का कारण बताओ।

› पहला, राजा का कर्तव्य अपनी प्रजा की रक्षा करना है, पर यहाँ राजा आलसी और डरपोक है।

› दूसरा, वह स्वयं की रक्षा भी नहीं कर पा रहा है, तो दूसरों की रक्षा कैसे करेगा?

› तीसरा, 'भक्षक' वह होता है जो नुकसान पहुंचाए। यह राजा भले ही सीधा नुकसान न पहुंचाए, लेकिन अपनी ज़िम्मेदारी न निभाकर वह प्रजा को खतरे में डाल रहा है, जो एक तरह से नुकसान ही है।

› इसलिए, ऐसा राजा अपनी प्रजा के लिए सही नहीं है।

› उसे या तो अपनी योग्यता बढ़ानी चाहिए या पद छोड़ देना चाहिए ताकि कोई योग्य व्यक्ति प्रजा की रक्षा कर सके।

उत्तर – नहीं, यह राजा अपनी प्रजा के लिए सही नहीं है, क्योंकि वह अपने कर्तव्य (रक्षक होना) और योग्यता (स्वयं की रक्षा में सक्षम होना) दोनों में ही विफल है।

उदाहरण 4. कौए ने वनराज बनने के लिए अपनी किन विशेषताओं का उल्लेख किया?

› पहला, उसने अपनी 'परिश्रम' (मेहनत) को बताया, जैसे विद्यार्थी 'काक चेष्टा' से सीखता है।

› दूसरा, उसने 'ऐक्यं' (एकता) पर ज़ोर दिया कि हम सब कौए एक साथ रहते हैं।

› तीसरा, उसने अपनी 'बुद्धिमत्ता' का संकेत दिया, कि लोग कहते हैं 'काकचेष्ट विद्यार्थी' आदर्श होता है।

उत्तर – कौए ने वनराज बनने के लिए अपनी मेहनत, एकता और बुद्धिमत्ता का उल्लेख किया।

उदाहरण 5. संस्कृत नाटक 'सौहार्दं प्रकृतेः शोभा' में कौआ किस आधार पर खुद को कोयल से श्रेष्ठ बताता है?

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि नाटक में कौआ और कोयल, दोनों अपने-अपने गुणों को बताते हैं।

› कोयल मुख्य रूप से अपनी मधुर आवाज़ पर ज़ोर देती है और कौए की कर्कश आवाज़ तथा उसके खान-पान पर सवाल उठाती है।

› इसके जवाब में, कौआ अपनी मेहनत और उपयोगिता का बखान करता है।

› वह कहता है कि यदि वह कोयल के बच्चों का पालन-पोषण न करे, तो कोयलें कहाँ से आएँगी? वह अपनी करुणा और परोपकारिता को भी श्रेष्ठता का आधार बनाता है।

› अंत में, वसंत ऋतु में ही असली पहचान होती है कि कौन कौआ है और कौन कोयल, क्योंकि तब कोयल मीठे स्वर में गाती है।

उत्तर – कौआ खुद को श्रेष्ठ इसलिए बताता है क्योंकि वह मेहनती है और परोपकारी है। वह कोयल के बच्चों का पालन-पोषण करता है, जिसकी वजह से कोयलें जीवित रहती हैं। वह अपनी 'करुणा' और 'मेहनत' को ही अपनी श्रेष्ठता का आधार मानता है।

उदाहरण 6. गज वनराज बनने के लिए क्या-क्या तर्क देता है?

› सबसे पहले, गज कहता है कि उसका शरीर 'विशालकाय' है, यानी बहुत बड़ा है।

› दूसरा, वह खुद को 'बलशाली' और 'पराक्रमी' बताता है, जिसका मतलब है कि उसके पास बहुत शक्ति और वीरता है।

› तीसरा, वह अपनी क्षमता बताता है कि वह किसी भी शिकारी को अपनी 'शुंडेन' (सूंड से) 'पोथयित्वा मारयिष्यामि' (पटक कर मार सकता है)।

› अंत में, इन सब गुणों के आधार पर वह खुद को 'वनराजपदाय योग्यः' (वनराज पद के लिए योग्य) घोषित करता है।

उत्तर – गज वनराज बनने के लिए अपने विशाल शरीर, अतुलनीय बल, और पराक्रम का दावा करता है, और कहता है कि वह किसी भी शिकारी को अपनी सूंड से मारकर हटा सकता है।

उदाहरण 7. वानर ने हाथी को कैसे पराजित किया?

› एक वानर ने अचानक हाथी की पूँछ पकड़ी।

› हाथी ने उसे पकड़ने की कोशिश की, पर वानर तुरंत पेड़ पर कूद गया।

› हाथी ने पेड़ को सूंड से हिलाया, पर वानर दूसरे पेड़ पर कूद गया।

› इस प्रकार, वानरों ने अपनी फुर्ती और चतुराई से हाथी को थका दिया और उसे पकड़ने नहीं दिया।

उत्तर – वानरों ने अपनी फुर्ती और चतुराई का प्रयोग करके हाथी को अपनी पूँछ पकड़ने से रोका और उसे परेशान करके पराजित किया।

उदाहरण 8. बगुला किस आधार पर खुद को वनराज के योग्य बताता है?

› बगुला अपनी अविचल ध्यानमग्नता को अपनी विशेषता बताता है।

› वह कहता है कि वह शांत रहकर सभी की रक्षा के लिए उपाय सोचेगा।

› फिर वह उन उपायों के लिए योजनाएँ बनाएगा।

› अंत में, वह अपनी सभा में अन्य जीवों के साथ मिलकर उन योजनाओं को क्रियान्वित भी करेगा।

उत्तर – बगुला अपनी एकाग्रता, शांति, और समस्या समाधान तथा योजना बनाने की क्षमता के आधार पर खुद को वनराज के योग्य बताता है।

उदाहरण 9. वनराज के पद के लिए मोर क्या तर्क देता है?

› मोर कहता है कि विधाता ने उसके सिर पर राजमुकुट जैसी शिखा लगाई है, इसलिए वह पक्षिराज है।

› वह अपने रंग-बिरंगे पंखों और मनमोहक नृत्य सौंदर्य को अपनी अनुपम विशेषता बताता है।

› वह दावा करता है कि त्रिलोक में उसके जैसा सुंदर कोई नहीं है।

› वह यह भी कहता है कि वह अपने सौंदर्य और नृत्य से हिंसक वन्यजीवों को आकर्षित करके जंगल से बाहर भगा देगा, जिससे जंगल की रक्षा होगी।

› इन सब गुणों के कारण, मोर स्वयं को वनराज के पद के लिए सबसे योग्य मानता है।

उत्तर – मोर अपनी राजमुकुट जैसी शिखा, अनुपम नृत्य सौंदर्य और अपनी सुंदरता से हिंसक जीवों को भगाने की क्षमता को वनराज के पद के लिए अपनी योग्यता का आधार बताता है।

उदाहरण 10. व्याघ्र और चित्रक को वनराज क्यों नहीं स्वीकार किया गया?

› पहला कदम: पहचानना कि व्याघ्र और चित्रक शिकारी जानवर हैं।

› दूसरा कदम: समझना कि शिकारी जानवर (भक्षक) होने के कारण वे दूसरे जानवरों को खाते हैं।

› तीसरा कदम: राजा का मुख्य कर्तव्य रक्षण करना होता है, न कि भक्षण।

› चौथा कदम: इस कारण, वे वनराज के पद के लिए अयोग्य माने गए।

उत्तर – व्याघ्र और चित्रक स्वभाव से भक्षक (शिकारी) हैं। वनराज का पद रक्षक का होता है, और एक भक्षक कभी भी रक्षक नहीं हो सकता। इसलिए, उन्हें वनराज स्वीकार नहीं किया गया।

उदाहरण 11. वन के सभी पक्षियों ने किसे राजा बनाने का विचार किया और कौए ने उसका विरोध क्यों किया?

› सबसे पहले, सभी पक्षी आपस में सहमत नहीं हो पाए कि कौन राजा बने।

› उन्होंने सोचा कि एक 'आत्माभिमान रहित' और 'पद से निर्लिप्त' जीव को राजा बनाना चाहिए।

› उन्होंने गहरे विचार के बाद एक उल्लू को राजा बनाने का निर्णय लिया, क्योंकि वह शांत और सीधा-साधा दिख रहा था।

› लेकिन कौए ने इसका तीव्र विरोध किया क्योंकि उल्लू 'दिवान्ध' (दिन में अंधा) है और उसका स्वभाव भी 'क्रूर' है।

› कौए ने कहा कि जो दिन में देख ही नहीं सकता, वह अपनी प्रजा की रक्षा कैसे करेगा और उसका क्रूर स्वभाव भी राजा के लिए ठीक नहीं।

उत्तर – सभी पक्षियों ने 'उल्लू' को राजा बनाने का विचार किया, जिसका कौए ने 'उल्लू के दिन में अंधे होने' और 'उसके क्रूर स्वभाव' के कारण विरोध किया।

उदाहरण 12. प्रकृति माता प्राणियों को क्या संदेश देती हैं?

› प्रकृति माता सबसे पहले सभी प्राणियों को अपना बच्चा मानती हैं।

› वे उन्हें आपस में कलह करने से रोकती हैं।

› वे समझाती हैं कि सभी प्राणी एक-दूसरे पर निर्भर हैं (अन्योन्याश्रित)।

› अंतिम संदेश यह है कि प्रेम और सहयोग से मिलकर रहना चाहिए, तभी सबका कल्याण संभव है।

› जीवन में आनंद और सौंदर्य बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है।

उत्तर – प्रकृति माता प्राणियों को संदेश देती हैं कि वे सब उनके बच्चे हैं और उन्हें आपस में लड़ने की बजाय, एक-दूसरे पर निर्भर रहते हुए प्रेम और सहयोग से मिलकर रहना चाहिए। इसी में सबका कल्याण और जीवन का आनंद है।

उदाहरण 13. एक गाँव में बार-बार बाढ़ आने से खेती का बहुत नुकसान होता था। गाँव वाले अक्सर एक-दूसरे पर दोष मढ़ते थे और झगड़ते थे। अब बताइए, इस समस्या का समाधान कैसे हो सकता है, जिससे सभी को लाभ मिले?

› सबसे पहले, गाँव वालों को आपस में झगड़ना बंद करके एक साथ बैठना चाहिए।

› फिर, उन्हें मिलकर यह सोचना चाहिए कि बाढ़ को रोकने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं, जैसे बाँध बनाना या पेड़ लगाना।

› सभी गाँव वालों को अपनी-अपनी क्षमतानुसार काम बांट लेना चाहिए और एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए।

› जब सब मिल-जुलकर काम करेंगे, तो बाढ़ से बचाव का उपाय सफल होगा और सभी की खेती बचेगी।

उत्तर – आपसी सहयोग से ही गाँव बाढ़ की समस्या का समाधान कर पाएगा और सभी को लाभ मिलेगा।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह पाठ नैतिक मूल्यों पर आधारित है, इसलिए इसके संदेश को अपनी भाषा में व्यक्त करने का अभ्यास करें। 'पारस्परिक स्नेह और सौहार्दपूर्ण व्यवहारः स्यादिति बोध्यति'

• यह कहानी का प्रारंभिक बिंदु है जहाँ से मुख्य विवाद शुरू होता है। अक्सर इस भाग से राजा की अयोग्यता और अन्य जानवरों के असंतोष पर आधारित प्रश्न आते हैं, इसलिए इसे ध्यान से समझें।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा में 'गद्यांश आधारित प्रश्न' या 'मूल्य आधारित प्रश्न' में पूछी जा सकती है, जहाँ आपको बताना होगा कि एक अच्छे शासक के क्या गुण होने चाहिए।

• यह अंश पात्रों के संवादों पर आधारित है, इसलिए प्रश्न सीधा 'किसने क्या कहा?' या 'किसके गुण-अवगुण क्या थे?' ऐसा आ सकता है।

• यह संवाद बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत ज़रूरी है! 'पिक-काकयोः भेदः' पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं, खासकर उनके गुणों और अंतर पर।

• यह अंश 'अहं विशालकायः, बलशाली, पराक्रमी च' इस पंक्ति के माध्यम से हाथी के चरित्र-चित्रण पर आधारित प्रश्न में महत्वपूर्ण है।

• यह भाग 'सौहार्दं प्रकृतेः शोभा' पाठ से है। इसमें हमें यह शिक्षा मिलती है कि किसी भी पद के लिए केवल शारीरिक बल नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता और सहयोग भी महत्वपूर्ण हैं। इस पर आधारित प्रश्नों की तैयारी ज़रूर करें।

• यह अंश बोर्ड परीक्षा में 'किसने क्या कहा' और 'कौन क्या तर्क दे रहा है' वाले प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है। मोर के तर्क को अच्छे से समझना।

• यह प्रश्न 'वनराज' के गुणों पर आधारित होता है। 'भक्षक' और 'रक्षक' के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

• यह अंश बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। कौए द्वारा उल्लू के विरोध के मुख्य बिन्दुओं को संस्कृत और हिंदी दोनों में याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है। 'दिवान्ध' और 'क्रूर स्वभाव' शब्दों को विशेष रूप से याद रखें।

• यह भाग कहानी का महत्वपूर्ण मोड़ है, जहाँ से कहानी का नैतिक संदेश स्पष्ट होता है। बोर्ड परीक्षा में प्रकृति माता के संदेश पर आधारित प्रश्न (जैसे 'प्रकृति माता क्या कहती हैं?') अक्सर पूछे जाते हैं, इसे ध्यान से समझें।

• यह अवधारणा जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और इस पर आधारित प्रश्न नैतिक शिक्षा या मूल्यों पर आधारित होते हैं। इसे अपनी भाषा में अच्छे से समझकर लिखिए।

एक नज़र में रिवीज़न

› आपसी स्नेह-सौहार्द समाज की शांति व प्रगति का आधार।
› कमजोर शेर, वानरों का विद्रोह, वनराज की छवि पर सवाल।
› राजा का कर्तव्य: प्रजा का रक्षक होना; योग्यता: स्वयं की रक्षा में सक्षम।
› कौए का दावा: परिश्रम, ऐक्य, बुद्धिमत्ता। कोयल की आलोचना: कर्कश ध्वनि, काला रंग।
› कोयल-कौआ: ध्वनि, स्वभाव, श्रम-परोपकार पर संवाद, वसंत में पहचान।
› गज: विशालकाय, बलशाली, पराक्रमी, शुंड से शिकारी को मार सकता है।
› वानर की चतुराई से हाथी पर विजय; शक्ति से ज़्यादा अकल ज़रूरी।
› मयूर: राजमुकुट शिखा, नृत्य सौंदर्य से खुद को पक्षिराज/वनराज मानता है।
› भक्षक (बाघ, तेंदुआ) रक्षक नहीं, अतः वनराज पद के अयोग्य।
› पक्षियों ने आत्माभिमान रहित उल्लू को राजा चुना, कौए ने दिवान्धता व क्रूरता के कारण विरोध किया।
› प्रकृति माता: सब प्राणी बच्चे, अन्योन्याश्रित, प्रेम-सहयोग से रहें।
› विवाद हानि, सहयोग लाभ; जीवन रसमय, प्रकृति सुंदर।